15-16

52

।। शीलं परं भूषणम्।।

श्री आचार्यरत्न देशभूषण शिक्षण प्रसारक मंडल, कोल्हापुर संचलित

महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'साठोत्तरी हिंदी साहित्य में चित्रित परिवार'

16 फरवरी, 2016

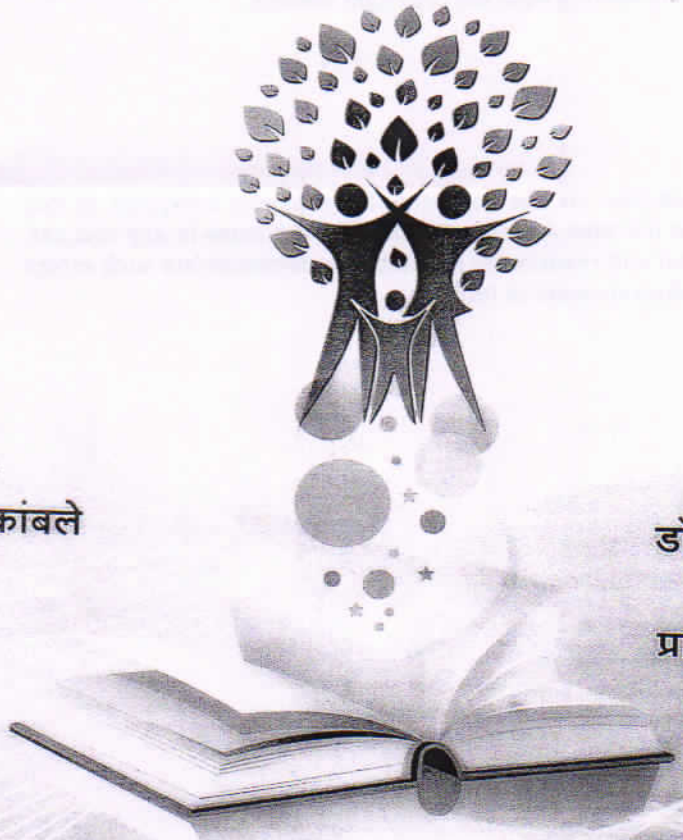

संपादक
डॉ. प्रकाश कांबले

सह-संपादक
डॉ. उत्तरा कुलकर्णी
डॉ. राजेंद्र रोटे
प्रा. रविदास पाडवी

शोधालेख पुस्तिका

संयोजक
हिंदी विभाग, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर

First Impression: 2016

©Editor

Mahavir College,
7/E, Vaishali Parisar, Bhausingji Road,
Kolhapur, Maharashtra, India- 416003.

ISBN: 978-81-927211-6-6

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval systems without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Publisher:

PraRup Publications
Kolhapur. (Maharashtra)

Printed By,

Shreekant Computers & Publishers,
Opp. Khare Mangal Karyalaya,
Shivaji University Road, Kolhapur
Mob. 9890499466, 8483829154

Cost: ₹ 220/-

I

scene of
scholar
the conte
the prom
subcontin
Indian fa
disintegr

By
their Ide
the path
colors.

I th
and fam
serious
the wo

I th
the confe
Ashok B
Departm

28	आपात्कालोत्तर कृषि–व्यवसाय केंद्रित हिंदी उपन्यासों में चित्रित परिवार	प्रा.डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	162
29	साठोत्तरी हिंदी कहानी में चित्रित परिवार (महीप सिंह के 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कथा–संग्रह के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ. प्रवीण चौगुले	168
30	महिला आत्मकथाओं मे पारिवारिक नारी जीवन	डॉ.विठ्ठल शंकर नाईक	175
31	पारिवारिक विघटन की जिंदा तस्वीर : पाँच आँगनोंवाला घर	प्रा. अजयकुमार कांबळे	181
32	'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में चित्रित पारिवारीक–नारी जीवन	प्रा. प्रकाश मधुकर आठवले	185
33	साठोत्तरी हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित पारिवारिक जीवन	जयसिंग मारुती कांबळे	189
34	आवारा मसीहा : एक अनशीलन	प्रा. जेलित कांबळे	194
35	महिला आत्मकथा लेखन में चित्रित परिवार (दांपत्य जीवन के संदर्भ में)	प्रा. सुधाकर इंडी	198
36	संयुक्त परिवार के विघटन का जीवंत तस्वीर : 'माटी कहे कुम्हार से'	डॉ. श्रीकांत पाटील	202
37	दौड उपन्यास में चित्रित शहरी और ग्रामीण पारिवारिक जीवन	प्रा. माधुरी कांबळे	205
38	'मन्नू भंडारी के कहानी में पारिवारीक जीवन'	अर्चना वसंत तराळ	208
39	"मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में पारिवारिक चित्रण"	सुश्री छाया शंकर माळी	211
40	साठोत्तरी हिन्दी कथा साहित्य में पारिवारिक मूल्य	डॉ. सुर्यकांत शिंदे	214
41	"साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में चित्रित परिवार"	सौ. सुषमा अमर मांडेकर	218

ISBN 978-81-927211-6-6

आपात्कालोत्तर कृषि–व्यवसाय केंद्रित हिंदी उपन्यासों में चित्रित परिवार

प्रा.डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज,हुपरी

प्रस्तावना–

भारतीय समाज जीवन की एक विशेषता परिवार संस्था का मजबूत ढाँचा है। व्यक्ति और परिवार का रिश्ता नाभीय होता है। परिवार व्यक्ति का उद्भव बिंदु ही नहीं तो व्यक्ति विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली संस्था है। व्यक्ति जहाँ चाहे घूमता रहे तथा उन्नति या अधोगति की धेकेलपेल से जूझता रहे; परिवार की छाया उसका आत्मबल बढ़ाती है। इस कारण ही मनुष्य अपने परिवार से अधिक लगाव रखता है। परिवार एक ऐसी संस्था है, जो व्यक्ति की मानसिक तृष्णा की परिपूर्ति करती है। परिणामतः व्यक्ति परिवार के बिना अधूरापन महसूस करता है। भारतीय किसान भी इसे अपवाद नहीं है। कृषि–व्यवसाय केंद्रित हिंदी उपन्यासों में किसानों के पारिवारिक जीवन का चित्रण अधिक मात्रा मे परिलक्षित होता है। विशेषतः कृषक परिवार के सदस्यों के आपसी व्यवहार में मिठास, कटुता, हास–विलाप, रोध–अवरोध, तान–तनाव, प्रेमालाप एवं संघर्ष परिलक्षित होता है। आपात्कालोत्तर हिंदी उपन्यासकारो न कृषक–वर्ग के पारिवारिक जीवन का चित्रण रागात्मक, भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक कसौटी पर किया है; जिसका विवचेन–विश्लेषण प्रस्तुत प्रपत्र में किया है

कृषक परिवार के बूढ़े –

बुजुर्ग सदस्य के बिना परिवार की परिकल्पना एवं परिभाषा अधूरी है। प्रकृति, घर, समाज एवं जाति–बिरादरी संबंधी के अनुभव से संपन्न बूढ़े किसान परिवार का आधार होते हैं। आपात्कालोत्तर हिंदी उपन्यासों में किसान परिवार के बूढ़ों का चित्रण घर–परिवार की चिंता करनेवाले के रूप में तथा अपने बहू– बेटे, नातिनों, पड़ोसी एवं गाँववालों से अनुरागभरा व्यवहार करनेवाले, समय–कुसमय पर सहायता करनेवाले तथा निर्मोही, धर्मनिरपेक्ष, मानवतावादी एवं परिवारवत्सल बुजुर्ग के रूप में अधिक मिलता है। 'चाक'उपन्यास के बाबा गजाधरसिंह, 'बेदखल' उपन्यास के शालिग्राम उर्फ साधू,'सोनामाटी' उपन्यास के सीरीभाई और 'डूब' उपन्यास के अमृतसिंह उर्फ माते मानवतावादी, परिवारवत्सल और आव यकतावश अनुशासन का महत्त्व माननेवाले बुजुर्ग किसान हैं। ये बुजुर्ग परिवार के अन्य सदस्यों के साथ प्रेमभरा व्यवहार करते हैं। बाबा गजाधरसिंह अपने बेटे रंजीत, भतीजा भँवर, पोता चंदन तथा बहू सारंग के प्रति प्रेमभरा व्यवहार करते हैं। बाबा अपने बड़े

बेटे के भ्रष्ट व्यवहार पर कोडे फटकारते हैं तो बेटे रंजीत को मारपीट होने पर बंदूक उठाते हैं। बाबा गजाधरसिंह के संदर्भ में मैत्रयी पुष्पा जी लिखती हैं –"बाबा अपना हुक्का सँभालने लगे। उन्हें माथे पर हाथ धरकर रोने की आदत नहीं। वैसे भी दुख को दुख की मदु।ा मे लेकर कभी उन्होने अपने आपको गम में नहीं डुबोया।"1 बेटा रंजीत जब बहू सारंग को मारपीट करता है तब बाबा बेटे को खड़े बोल सुनाते हैं और गाँव प्रधान के चुनाव में बहू की उम्मीदवारी को सहर्श अनुमति देते हैं। जिससे उनका व्यवहारज्ञान और अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाली भूमिका सामने आती है। 'बदे खल' उपन्यास के शालिग्राम उर्फ साधू अपनी पत्नी, तीन बेटे तथा बहुरानियाँ और सात नातिनों के भरे–पूरे परिवार में रहते हैं। बड़ी बहू अपनी सास तथा अन्य देवरानियों को महत्त्व नहीं देती, तो साधू उसे फटकारते नहीं हैं। किंतु समय–समय पर वे बड़ी बहू को एहसास दिलाते हैं कि वे परिवार के मुखिया हैं। परिवार के सदस्य भी साधू का सम्मान करते हैं। निर्मोही शालिग्राम पोते की शादी तय करते समय दहेज को महत्त्व नहीं देते। बेटे रामहित और पोते मथुरा की मृत्यु पर अंदर से टूटे शालिग्राम हृदय का भोक व्यक्त नहीं करते। गाँव को अपना परिवार माननेवाले बुजुर्ग शालिग्राम कुर्मी किसान सुचित को सहायता करते रहते हैं।

'डूब' उपन्यास के माते दो पत्नियाँ और बेटे तथा पोते अनेकसिंह और पतोहु अहल्या के साथ रहते हैं। परिवारवत्सल माते पतोहु की नाजायज औलाद रामदुलारे तथा उसे सँभालनेवाली गोराबाई के प्रति लगाव रखते हैं। गाँव को परिवार माननेवाले माते राजनेताओं की शोषक नीति देखकर आक्रोश व्यक्त करते हैं। 'सोनामाटी' उपन्यास के सीरीभाई जब दीनदयाल उनकी जमीन ऐंठता है तब बेटी की शादी, बेटे की पढ़ाई, बैल–बछियों का साना–पानी तथा ऋण न मिलने की चिंता से त्रस्त रहते हैं। परिवार के सदस्य सीरीभाई का खयाल करते हैं। सीरीभाई का बेटा खेत लुटनेवाले दीनदयाल से संघर्ष करनेवाले सीरीभाई को साथ देता है।

कृषि–व्यावसायिक वर्ग केंद्रित हिंदी उपन्यासों में किसान परिवार के आपमतलबी बूढ़ो का चित्रण भी मिलता है। 'चाक' उपन्यास के साधजी के आपमतलबी एवं अहंकारी जीवन [illegible] उनके पुत्रों पर नजर आता है। साधजी का छोटा बेटा डोरिया गुंड़ागर्दी करता [illegible] बेटा शत्रुसिंह भ्रष्ट व्यवहार करता है। 'सोनामाटी' उपन्यास के [illegible]

ISBN 978-81-927211-6-6

कृषक परिवार की बुढ़िया–

आपात्कालोत्तर कृषि व्यावसायिक वर्ग केंद्रित हिंदी उपन्यासो में कृषक परिवार की बुढ़िया का चित्रण मर्यादाशील,व्यवहारचतुर तथा परिवार–सदस्यों में घुली–मिली नारी के रूप में मिलता है।'सोनामाटी' उपन्यास की रामरूप की माँ धर्मभीरू, व्यवहारचतुर और परिवारवत्सल है। रामरूप की माँ धार्मिक अनुष्ठान करती है। वह पंचकोस के मेले में भक्तिभाव से शामिल होती है। वह रामरूप के दोस्त भारतेदु वर्मा से पुत्रवत प्रेम करती है। रामरूप की माँ और बहू के बीच सौहार्द संबंध दिखाई देते हैं। व्यवहारचतुर रामरूप की माँ रूपयों की बचत करती है आरै पोती की शादी के समय चिंतित बेटे को रुपए देती है "रसोई घर की चुहानी की जमीन खोद माँ ने काई लगाकर काली पड़ी फूल की सनातन बदुली निकाली और उसका मुँह खोला तो वह मारे खुशी की खनक के नाच उठा। अन्तस्तल उछलने लगा।"2 स्पष्ट होता है कि किसान परिवार की बुजुर्ग स्त्री भविष्य का विचार करती है। 'बेदखल' उपन्यास के कृषक शालिग्राम की पत्नी बुढ़ऊ का शरीर–स्वास्थ्य दुर्बल है। थकी बुढ़ऊ का चित्रण करते समय उपन्यासकार लिखते हैं –"बूढ़ी पूरी गऊ थी। ऊपर से साँस की मरीज। देखते–देखते सब कुछ बड़ी बहू के कब्जे में आ गया था। बूढ़ा कभी मंझली का पक्ष लेकर कुछ बोलती तो उन पर भी झाड़ पड़ जाती थी।"3 इससे विदित होता है कि साधू के संयुक्त परिवार में थकी एवं बीमारग्रस्त बुढ़ऊ अधिकारहीन तथा उपेक्षित–सा जीवन जीती है। वह बाल–विधवा बनी मथुरा की पत्नी को आत्महत्या करने से बचाती है। प्रस्तुत उपन्यास की सुचित की माँ बेटे के साथ दिन–रात श्रम करती है। वह भरा खलिहान देखकर सपने संजोती है। खुद चिथड़े पहननवोली माँ बहू के लिए धोती खरीदना चाहती है । सुचित की माँ और पत्नी के बीच का अनुरागभरा रिश्ता सामने आता है। सुचित की माँ आभूषणों से अधिक परिवार–सदस्यों से प्रेम करती है। लगान की किश्त न देनेवाले बेटे को सिपाही जब मुर्गा बनाता है तब सुचित की माँ अपने गिलट और बाजुबंद पदारथ महाराज को देती है।

कृषक परिवार की परंपरावादी विचार की सास अन्यायी नजर आती है। 'चाक' उपन्यास की बुढ़िया चंदा तथा हुकुमकौर परंपरावादी एवं असंवेदनशील बुढ़िया हैं। हुकुमकौर अपनी गर्भवती बहू रेशम का गर्भ गिराने का प्रयास करती है और बाद में रेशम का कत्ल करनेवाले परिवार–सदस्यों को सहायता करती है। हुकुमकौर बेटों से बेहद प्यार करती है। भँवर की माँ चंदा मुँहफट है। वह गाली–गलौज करती है; पर हृदय से दु मनी नहीं करती है। ननद के साथ अनमन होने पर ननद के रिश्तेदार केलासीसिंह का स्वागत करती है।

कृषक परिवार का दांपत्य जीवन –

विवाह पति और पत्नी के यौन संबधों को नैतिक मान्यता देता है। दांपत्य जीवन का सुख नैतिकता, विश्वासमयता तथा निस्वार्थतता जैसे मूल्य–सूत्रों पर निर्भर करता है। मूल्यों की कमी पति–पत्नी के रिश्ते में कटुता, तान–तनाव और संघर्ष निर्माण करता है। जो

एवं अल्पशिक्षित युवाओ में से अधिकतर युवक प्रेमालाप, आवारापन, लुटपाट, गुंडागर्दी, पहलवानकी तथा उजड्ड़पन करते हुए परिलक्षित होते हैं। जिसका परिणाम पूरे परिवार पर परिलक्षित होता है। 'चाक' उपन्यास का अनपढ़ डोरिया पहलवान, 'विकल्प' उपन्यास के रूदल चौबे, 'डूब' उपन्यास के कैलाश महाराज आवारे, व्यसनी,वासनांध तथा गुंडागर्दी करनेवाले युवा हैं। बदसूरत अविवाहित डोरिया विधवा भाभी रेशम के साथ शादी करना चाहता है। गर्भवती रेशम जब डोरिया का प्रस्ताव ठुकराती है तब डोरिया रेशम को बिटौरे में जलाता है। डोरिया सारंग की छेड़खानी कर सारंग के बेटे चंदन को मारने की धमकी देता है। डोरिया के कारण पूरा परिवार बदनाम होता है। 'विकल्प' उपन्यास के रूदल चौबे मिड़िल तक ही पढ़कर पिताजी की इच्छानुसार पहलवान बनता है। पहलवान रूदल भाई के साथ लाठी के बूते गाँववालों पर अन्याय करता है। 'डूब' उपन्यास के युवा कैलाश महाराज कृषक चंद्रभान की बेटी अहल्या पर जबरदस्ती करता है। पंच माते चंद्रभान की चिंता दूर करते हैं। पर अहल्या की दूर्दशा से पूरा परिवार चिंता एवं डर के साये में रहता है। उपन्यास में प्रेमी युवा दीपू का चित्रण है। सावित्री के साथ भादी न होने पर दीपू ससुराल जानेवाली सावित्री को उठाता है। पंच दीपू को दंडित करते हैं। इससे विदित हाते ा है कि प्रेम में अंधे हुए अनपढ़ युवा अपने परिवार की चिंता बढाते हैं। कृषक परिवार के शिक्षित युवा – आपात्कालोत्तर कृषि–जीवन केंद्रित हिंदी उपन्यासों में पढ़ाई–लिखाई का महत्त्व समझे किसान अपने परिवार के बच्चों को ऋण लेकर भी क्यों न हो पढ़ाते हुए नजर आते हैं। मात्र किसान वर्ग में उच्च–शिक्षा ग्रहण करनेवाले युवाओ की तादाद कम दिखाई देती है। किसान अपने पढ़े–लिखे लड़के सेखेतीबाडी की अपेक्षा नौकरी प्राप्ति की कामना करते हैं। अधिकतर उच्च–शिक्षित युवक गाँव और परिवार सेलगाव रखते हुए परिलक्षित होते हैं। 'विकल्प' उपन्यास के प्रो. कृष्णदेव विश्वविद्यालय में प्रोफसरी करते हैं,पर अपने परिवार और गाँव से लगाव रखते हैं। वे हर शनिचर को गाँव आते हैं और पारिवारिक एवं गाँव के कार्यों में रूचि लेते हैं। राजापुर गाँव के उच्च–शिक्षित युवा तथा उनके माता–पिता की मानसिकता हीअलग है।कई किसान खेत रेहन रखकर बच्चों को पदवी तथा पदव्युत्तर शिक्षा देते हैं। किंतु शिक्षित बेटाखेती करे यह बात पसंद नहीं करते। 'चाक' उपन्यास का उच्च–शिक्षित रंजीत परिवार से लगाव रखता है।

प्रस्तुत उपन्यास मे रंजीत के उच्च–शिक्षित चचेरे भाई भँवर का चित्रण है। कृषक खुबाराम अपनी पदवीप्राप्त बेटे भँवर की नौकरीप्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं। किंतु भँवर को नौकरी नहीं मिलती। खेतीकरनेवाला भँवर माता–पिता, पत्नी, चाचा, चचेरे भाई–भाभी के साथ मिल–जुलकर रहता है। गाँव के प्रधानफत्तेसिंह का पदवी प्राप्त बेटा हुकुमसिंह विनम्र स्वभाव का है। फत्तेसिंह हुकुमसिंह को चपरासी के अलावाअन्य नौकरी प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कृशक अपने पढे लिखे बेटे कोखेती कार्य में लगाना अपना और परिवार का अपमान समझते हैं।

ISBN 978-81-927211-6-6

निष्कर्ष –

आपात्तकालोत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक परिवार के सदस्यों के आपसी व्यवहार में मिठास, कटुता, हास–विलाप, रोध–अवरोध, तान–तनाव, प्रेमालाप एवं संघर्ष परिलक्षित होता है। विशेषतः हिंदी उपन्यासकारो ने कृषक–वर्ग के पारिवारिक जीवन का चित्रण रागात्मक, भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक कसौटी पर किया है। किसान परिवार के बूढ़े घर–परिवार की चिंता करते हैं। वे अपने बहू–बेटे, नातिनों,पड़ोसी एवं गाँववालों से अनुरागभरा व्यवहार करते हैं। अधिकत्तर उपन्यासकारों ने किसान परिवार के बूढ़ोंका चित्रण सहायकशील,निर्मोही, धर्मनिरपेक्ष, मानवतावादी एवं परिवारवत्सल बुजुर्ग के रूप में किया है। साथही किसान परिवार के आपमतलबी बूढ़ों का चित्रण भी मिलता है कृषि कर्म में कार्यरत बुढ़िया को कृषक परिवार के सदस्य अधिकार एवं मान–सम्मान देते हैं। ऐसी बुढ़िया परिवारवत्सल, व्यवहारचतुर, निर्मोही तथाधर्मानुरागी नजर आती हैं। कृषक–परिवार में आपमतलबी तथा स्वार्थांध बुढ़िया की तादाद कम है। किंतु परंपरावादी विचार की सास अन्यायी नजर आती है। किसान परिवार में बुढ़ों की तुलना में बुढ़िया को कमसम्मान मिलता है। कृषक परिवार के पति–पत्नी के दांपत्य–जीवन में प्रेम, विश्वास, सुख–दुख बाँटने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है; तो आदर्श एवं तनावपूर्ण दांपत्य जीवन का चित्रण भी मिलता है। पति के सिद्धांतवादी जीवन–व्यवहार पर प्रेम करनेवाली पढ़ी–लिखी कृषक पत्नी पथ भ्रष्ट पति के आचार–विचार का खुलकर विरोध करती है। कृषक परिवार के प्रेमालाप, आवारापन, लुटपाट, गुंडागर्दी, पहलवान की तथा उजड्डपन करनेवाले अनपढ़ एवं अल्पशिक्षित युवाओं के कारण पूरा परिवार परेशान नजर आता है। कृषक परिवार के नौकरी प्राप्ति के लिए प्रयास करनेवाले उच्च–शिक्षित युवक खेती करने से कतराते हैं।उच्च–शिक्षित एवं नौकरी प्राप्त युवक गाँव से लगाव रखते हैं। जमींदारों के उच्च–शिक्षित बेटे खेतीबाड़ी की अपेक्षा [illegible] देते हैं।

[illegible] राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. 1997),पृ. 33

[illegible] सं. 2004), पृ.120

[illegible]

[illegible] प्रकाशन, प्र.सं. 1991),पृ. 12